THE RESEARCH DIALOGUE
An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
© The Research Dialogue | Volume-05 | Issue-01 | April-2026
Available online at: https://theresearchdialogue.com/

आवासीय विद्यालयों के संघटनात्मक वातावरण का विद्यार्थियों के व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

दिनेश कुमार[1], डॉ0 सुशील कुमार[2]
[1]शोधार्थी, शिक्षा विभाग, हिन्दू कॉलेज, मुरादाबाद
[2]एसोसिएट प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, हिन्दू कॉलेज, मुरादाबाद

सारांश

आवासीय विद्यालयों के संघटनात्मक वातावरण का विद्यार्थियों के व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव शैक्षिक प्रक्रिया में एक अत्यंत महत्वपूर्ण रखता है। वर्तमान युग में शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान प्रदान करना नहीं, बल्कि विद्यार्थियों के सर्वांगीण व्यक्तित्व का विकास करना है। इस संदर्भ में आवासीय विद्यालयों की भूमिका विशेष रूप से महत्वपूर्ण हो जाती है, क्योंकि यहाँ विद्यार्थी परिवार से दूर रहकर विद्यालय के वातावरण में ही अपने जीवन के अधिकांश अनुभव प्राप्त करते हैं। अतः विद्यालय का संघटनात्मक वातावरण जिसमें प्रशासनिक व्यवस्था, अनुशासन, शिक्षक–विद्यार्थी संबंध, सहपाठी समूह, सहशैक्षिक गतिविधियाँ तथा सांस्कृतिक परिवेश सम्मिलित होते हैं विद्यार्थियों के व्यक्तित्व निर्माण में निर्णायक भूमिका निभाता है। इससे स्पष्ट कि एक सकारात्मक, सहयोगात्मक एवं प्रेरणादायक संघटनात्मक वातावरण विद्यार्थियों में आत्मविश्वास, आत्मनिर्भरता, नेतृत्व क्षमता तथा सामाजिक समायोजन जैसे गुणों का विकास करता है। वहीं, नकारात्मक या दमनकारी वातावरण विद्यार्थियों में तनाव, असुरक्षा, हीन भावना तथा व्यवहारिक समस्याओं को जन्म दे सकता है। विशेष रूप से आवासीय विद्यालयों में, जहाँ विद्यार्थियों का जीवन एक नियोजित दिनचर्या के अंतर्गत चलता है, वहाँ अनुशासन, समय प्रबंधन और सामूहिक जीवन के अनुभव उनके व्यक्तित्व को गहराई से प्रभावित करते हैं। शिक्षक यहाँ केवल ज्ञानदाता ही नहीं, बल्कि मार्गदर्शक एवं अभिभावक की भूमिका निभाते हैं, जिससे विद्यार्थियों के भावनात्मक एवं सामाजिक विकास को बल मिलता है। प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग करते हुए मुरादाबाद जनपद के 100 विद्यार्थियों को स्तरीकृत यादृच्छिक विधि द्वारा चयनित किया गया। अध्ययन में संघटनात्मक वातावरण एवं व्यक्तित्व मापन हेतु मानकीकृत प्रश्नावलियों का उपयोग किया गया। प्राप्त आंकड़ों के विश्लेषण से यह पाया गया कि विद्यार्थियों, छात्रों एवं छात्राओं तीनों समूहों में संघटनात्मक वातावरण और व्यक्तित्व के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध तो पाया गया, किन्तु यह सहसम्बन्ध सांख्यिकीय दृष्टि से सार्थक नहीं था। अर्थात् यद्यपि वातावरण और व्यक्तित्व के बीच संबंध का संकेत मिलता है, फिर भी यह प्रभाव इतना प्रबल नहीं है कि उसे निर्णायक या महत्वपूर्ण माना जा सके। अध्ययन के निष्कर्षों से यह स्पष्ट होता है कि आवासीय विद्यालयों का संघटनात्मक वातावरण व्यक्तित्व विकास में कुछ हद तक सहायक अवश्य है, परन्तु यह एकमात्र या प्रमुख निर्धारक कारक नहीं है। व्यक्तित्व विकास पर अन्य अनेक कारक जैसे पारिवारिक पृष्ठभूमि,

व्यक्तिगत विशेषताएँ, सामाजिक अनुभव एवं मनोवैज्ञानिक अवस्थाएँ भी समान रूप से प्रभाव डालते हैं। इसलिए केवल विद्यालयी वातावरण के आधार पर व्यक्तित्व के विकास को पूर्णतः समझना संभव नहीं है। अंततः, यह अध्ययन शिक्षा क्षेत्र के लिए महत्वपूर्ण संकेत प्रदान करता है कि यद्यपि संघटनात्मक वातावरण को सकारात्मक, लोकतांत्रिक एवं सहयोगात्मक बनाना आवश्यक है, फिर भी विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के लिए बहुआयामी दृष्टिकोण अपनाना चाहिए। विद्यालयों को चाहिए कि वे न केवल अपने वातावरण को सुदृढ़ बनाएं, बल्कि विद्यार्थियों के व्यक्तिगत, सामाजिक एवं भावनात्मक पक्षों पर भी समान ध्यान दें, ताकि उनके व्यक्तित्व का संतुलित एवं समग्र विकास सुनिश्चित किया जा सके।

मुख्य शब्द : आवासीय विद्यालय, संघटनात्मक वातावरण, विद्यार्थी, व्यक्तित्व

प्रस्तावना

वर्तमान समय में शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञानार्जन तक सीमित नहीं रह गया है बल्कि यह व्यक्तित्व के समग्र विकास का माध्यम बन चुका है। विशेष रूप से आवासीय विद्यालय, जहाँ विद्यार्थी अपने परिवार से दूर रहकर विद्यालय परिसर में ही शिक्षा प्राप्त करते हैं, उनके व्यक्तित्व निर्माण में एक विशिष्ट भूमिका निभाते हैं। ऐसे विद्यालयों का संघटनात्मक वातावरण जिसमें प्रशासनिक व्यवस्था, अनुशासन, सहशैक्षिक गतिविधियाँ, शिक्षक–विद्यार्थी संबंध, सहपाठी समूह, समय–सारणी, नियमावली तथा सांस्कृतिक परिवेश शामिल होते हैं विद्यार्थियों के मानसिक, सामाजिक, भावनात्मक एवं नैतिक विकास को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है। अतः इस विषय का अध्ययन न केवल शैक्षिक अनुसंधान के लिए महत्वपूर्ण है बल्कि शिक्षा–नीति निर्माण और विद्यालय प्रबंधन के लिए भी अत्यंत उपयोगी सिद्ध होता है।

आवासीय विद्यालयों में विद्यार्थियों का जीवन एक संरचित एवं नियोजित प्रणाली के अंतर्गत संचालित होता है, जहाँ उनके दैनिक क्रियाकलाप जागने से लेकर सोने तक निश्चित समय–सारणी के अनुसार निर्धारित होते हैं। यह संघटनात्मक व्यवस्था विद्यार्थियों में अनुशासन, समय प्रबंधन, आत्म–नियंत्रण और जिम्मेदारी की भावना का विकास करती है। इसके साथ ही, आवासीय विद्यालयों में विद्यार्थियों को सामूहिक जीवन जीने का अवसर मिलता है, जिससे उनमें सहयोग, सहानुभूति, सहिष्णुता और सामाजिक समायोजन जैसे गुण विकसित होते हैं। इस प्रकार, संघटनात्मक वातावरण विद्यार्थियों के सामाजिक व्यक्तित्व के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

इसके अतिरिक्त, आवासीय विद्यालयों में शिक्षक केवल ज्ञान प्रदान करने वाले नहीं होते बल्कि वे मार्गदर्शक, संरक्षक एवं अभिभावक की भूमिका भी निभाते हैं। शिक्षक–विद्यार्थी के बीच निकट संपर्क और निरंतर संवाद विद्यार्थियों में आत्मविश्वास, आत्म–सम्मान और सकारात्मक दृष्टिकोण के विकास में सहायक होता है। यदि विद्यालय का संघटनात्मक वातावरण सहयोगात्मक, प्रेरणादायक और लोकतांत्रिक है, तो यह विद्यार्थियों में नेतृत्व क्षमता, निर्णय लेने की योग्यता तथा रचनात्मकता को प्रोत्साहित करता है। वहीं, यदि वातावरण अत्यधिक कठोर या दमनकारी है, तो इससे विद्यार्थियों में भय, तनाव, असुरक्षा और आत्मविश्वास की कमी उत्पन्न हो सकती है, जो उनके व्यक्तित्व के विकास को बाधित करती है।

आवासीय विद्यालयों के संघटनात्मक वातावरण में सहशैक्षिक गतिविधियों का भी विशेष महत्व होता है। खेल–कूद, सांस्कृतिक कार्यक्रम, वाद–विवाद, नाटक, संगीत, कला आदि गतिविधियाँ विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में सहायक होती हैं। ये गतिविधियाँ विद्यार्थियों के शारीरिक विकास के साथ–साथ उनके भावनात्मक संतुलन, रचनात्मक अभिव्यक्ति और सामाजिक सहभागिता को भी सुदृढ़ बनाती हैं। इस प्रकार, संघटनात्मक वातावरण यदि विविध गतिविधियों से समृद्ध है, तो यह विद्यार्थियों के व्यक्तित्व को बहुआयामी रूप से विकसित करता है।

आवासीय विद्यालयों में रहने वाले विद्यार्थियों के लिए सहपाठी समूह भी व्यक्तित्व निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। चूँकि विद्यार्थी अधिकांश समय अपने साथियों के साथ बिताते हैं, इसलिए उनके व्यवहार, आदतें, दृष्टिकोण और मूल्य एक–दूसरे से प्रभावित होते हैं। यदि सहपाठी समूह सकारात्मक, सहयोगी और प्रेरणादायक है, तो यह विद्यार्थियों में स्वस्थ प्रतिस्पर्धा, नैतिकता और सामूहिकता की भावना को विकसित करता है। इसके विपरीत, नकारात्मक समूह का प्रभाव विद्यार्थियों के व्यवहार और व्यक्तित्व पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकता है। अतः विद्यालय का संघटनात्मक वातावरण इस प्रकार होना चाहिए कि वह सकारात्मक सहपाठी संस्कृति को प्रोत्साहित करे।

संघटनात्मक वातावरण का एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू विद्यालय की प्रशासनिक शैली और नेतृत्व है। विद्यालय के प्रधानाचार्य एवं प्रबंधन की कार्यशैली, निर्णय लेने की प्रक्रिया, अनुशासन व्यवस्था और संवाद प्रणाली विद्यार्थियों के व्यक्तित्व पर गहरा प्रभाव डालती है। एक लोकतांत्रिक एवं सहभागितापूर्ण नेतृत्व शैली विद्यार्थियों में आत्मनिर्भरता, जिम्मेदारी और नेतृत्व कौशल को विकसित करती है, जबकि अधिनायकवादी शैली उनके आत्म–विकास को सीमित कर सकती है। इसलिए, यह आवश्यक है कि विद्यालय का प्रशासनिक ढाँचा लचीला, संवेदनशील और विद्यार्थी–केंद्रित हो।

भावनात्मक दृष्टि से भी आवासीय विद्यालयों का संघटनात्मक वातावरण अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। चूँकि विद्यार्थी अपने परिवार से दूर रहते हैं, इसलिए विद्यालय का वातावरण उनके लिए एक "दूसरा घर" बन जाता है। यदि यह वातावरण स्नेहपूर्ण, सुरक्षित और सहयोगात्मक है, तो विद्यार्थी भावनात्मक रूप से संतुलित रहते हैं और उनका आत्मविश्वास बढ़ता है। इसके विपरीत, यदि वातावरण में कठोरता, उपेक्षा या असंवेदनशीलता है, तो विद्यार्थी अकेलापन, तनाव और असुरक्षा का अनुभव कर सकते हैं, जो उनके व्यक्तित्व के विकास को नकारात्मक रूप से प्रभावित करता है।

आधुनिक समय में, जब शिक्षा का उद्देश्य केवल अकादमिक उपलब्धि तक सीमित नहीं है, बल्कि जीवन कौशल, नैतिक मूल्यों और सामाजिक जिम्मेदारी का विकास भी उतना ही महत्वपूर्ण है, तब आवासीय विद्यालयों के संघटनात्मक वातावरण का अध्ययन और भी आवश्यक हो जाता है। यह अध्ययन यह समझने में सहायता करता है कि किस प्रकार का वातावरण विद्यार्थियों के लिए अधिक अनुकूल है और किस प्रकार की व्यवस्थाएँ उनके व्यक्तित्व के विकास में बाधक हैं। इसके आधार पर विद्यालय प्रबंधन अपनी नीतियों और कार्यक्रमों में आवश्यक सुधार कर सकता है।

इस प्रकार, आवासीय विद्यालयों के संघटनात्मक वातावरण का विद्यार्थियों के व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन एक बहुआयामी और व्यापक विषय है, जो शिक्षा के विभिन्न आयामों शैक्षणिक, सामाजिक, भावनात्मक और नैतिक को समाहित करता है। यह अध्ययन न केवल विद्यार्थियों के विकास को समझने में सहायक है, बल्कि शिक्षा प्रणाली को अधिक प्रभावी, मानवीय और समावेशी बनाने की दिशा में भी महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करता है। अतः इस विषय पर गहन अनुसंधान की आवश्यकता है, ताकि आवासीय विद्यालयों के वातावरण को इस प्रकार विकसित किया जा सके कि वह विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के समग्र और संतुलित विकास को सुनिश्चित कर सके।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

आवासीय विद्यालयों के संघटनात्मक वातावरण का विद्यार्थियों के व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन वर्तमान शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में अत्यंत महत्वपूर्ण एवं प्रासंगिक विषय है। आज के युग में शिक्षा केवल ज्ञानार्जन तक सीमित नहीं रह गई है, बल्कि यह व्यक्तित्व के समग्र विकास का प्रमुख साधन बन चुकी है। विशेष रूप से आवासीय विद्यालय, जहाँ विद्यार्थी विद्यालय परिसर में ही रहकर अध्ययन करते हैं, उनके लिए विद्यालय का वातावरण ही परिवार, समाज एवं संस्कृति का स्थान ले लेता है। ऐसे में यह समझना अत्यंत आवश्यक हो जाता है कि विद्यालय का संघटनात्मक वातावरण

जिसमें प्रशासनिक संरचना, शिक्षक–विद्यार्थी संबंध, अनुशासन, सह–पाठ्यक्रम गतिविधियाँ, तथा सामाजिक–सांस्कृतिक वातावरण शामिल होते हैंकृविद्यार्थियों के व्यक्तित्व निर्माण में किस प्रकार प्रभाव डालता है।

इस अध्ययन की आवश्यकता इसलिए भी है क्योंकि आवासीय विद्यालयों में विद्यार्थी अपने परिवार से दूर रहते हैं और उनके व्यवहार, भावनाओं, दृष्टिकोण तथा मूल्यों के निर्माण में विद्यालय का वातावरण निर्णायक भूमिका निभाता है। यदि विद्यालय का वातावरण सहयोगात्मक, प्रेरणादायक एवं सकारात्मक है, तो यह विद्यार्थियों में आत्मविश्वास, आत्मनिर्भरता, नेतृत्व क्षमता तथा सामाजिक समायोजन जैसी गुणों का विकास करता है। इसके विपरीत, यदि वातावरण दमनकारी, कठोर या असहयोगात्मक है, तो यह विद्यार्थियों में हीन भावना, तनाव, आक्रोश तथा असामाजिक प्रवृत्तियों को जन्म दे सकता है। अतः यह अध्ययन यह जानने के लिए आवश्यक है कि कौन–से वातावरणीय घटक विद्यार्थियों के व्यक्तित्व को सकारात्मक दिशा में विकसित करते हैं और किन तत्वों से नकारात्मक प्रभाव उत्पन्न होता है।

इसके अतिरिक्त, वर्तमान समय में शिक्षा नीति एवं विद्यालयी प्रबंधन में गुणवत्ता सुधार पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। इस संदर्भ में यह अध्ययन विद्यालय प्रशासकों, शिक्षकों एवं नीति–निर्माताओं को यह समझने में सहायता प्रदान करेगा कि आवासीय विद्यालयों के वातावरण को किस प्रकार इस प्रकार विकसित किया जाए कि वह विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास को प्रोत्साहित कर सके। उदाहरण के लिए, यदि यह पाया जाता है कि लोकतांत्रिक एवं सहभागितापूर्ण वातावरण विद्यार्थियों के व्यक्तित्व को अधिक सशक्त बनाता है, तो विद्यालयों में ऐसी व्यवस्थाओं को बढ़ावा दिया जा सकता है। इसी प्रकार, यदि शिक्षक–विद्यार्थी संबंधों की गुणवत्ता का व्यक्तित्व विकास पर गहरा प्रभाव पाया जाता है, तो शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में इस पक्ष को विशेष महत्व दिया जा सकता है।

अध्ययन का महत्व इस दृष्टि से भी है कि यह विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य एवं भावनात्मक संतुलन को समझने में सहायक होगा। आवासीय विद्यालयों में रहने वाले विद्यार्थियों को कई बार घर से दूर रहने के कारण अकेलेपन, असुरक्षा अथवा तनाव जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। यदि विद्यालय का वातावरण सहानुभूतिपूर्ण एवं सहयोगी हो, तो यह इन समस्याओं को कम करने में सहायक हो सकता है। अतः यह अध्ययन यह स्पष्ट करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा कि किस प्रकार का वातावरण विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य को सुदृढ़ बनाता है और उनके व्यक्तित्व को संतुलित एवं सकारात्मक दिशा प्रदान करता है।

इसके साथ ही, यह अध्ययन सामाजिक दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। आवासीय विद्यालयों में विभिन्न सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से आने वाले विद्यार्थी एक साथ रहते हैं। ऐसे में विद्यालय का वातावरण उनके सामाजिक समायोजन, सहिष्णुता, सहयोग भावना तथा सांस्कृतिक समझ को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यदि विद्यालय का वातावरण समावेशी एवं समानता पर आधारित है, तो यह विद्यार्थियों में सामाजिक एकता एवं बंधुत्व की भावना को सुदृढ़ करता है। अतः यह अध्ययन यह समझने में सहायता करेगा कि विद्यालय किस प्रकार एक स्वस्थ एवं समावेशी समाज के निर्माण में योगदान दे सकते हैं।

शैक्षिक अनुसंधान के क्षेत्र में भी इस अध्ययन का विशेष महत्व है। यह अध्ययन न केवल एक विशिष्ट प्रकार के विद्यालय आवासीय विद्यालय पर केंद्रित है, बल्कि यह व्यक्तित्व विकास जैसे जटिल एवं बहुआयामी विषय से भी संबंधित है। इससे प्राप्त निष्कर्ष भविष्य के अनुसंधानों के लिए आधार प्रदान करेंगे तथा अन्य प्रकार के विद्यालयों में भी वातावरण एवं व्यक्तित्व के संबंध को समझने में सहायक होंगे। इसके अतिरिक्त, यह अध्ययन विभिन्न मनोवैज्ञानिक एवं शैक्षिक सिद्धांतों की पुष्टि या पुनर्मूल्यांकन करने में भी सहायक हो सकता है।

अंततः, यह कहा जा सकता है कि आवासीय विद्यालयों के संघटनात्मक वातावरण का विद्यार्थियों के व्यक्तित्व पर प्रभाव का अध्ययन न केवल शैक्षिक दृष्टि से आवश्यक है, बल्कि सामाजिक, मनोवैज्ञानिक एवं नीतिगत दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह अध्ययन यह स्पष्ट करने में सहायक होगा कि विद्यालय का वातावरण किस प्रकार विद्यार्थियों के व्यक्तित्व को आकार देता है और उनके भविष्य को प्रभावित करता है। इसके माध्यम से प्राप्त निष्कर्ष विद्यालयों के वातावरण को अधिक सकारात्मक, सहयोगात्मक एवं विकासोन्मुख बनाने में मार्गदर्शन प्रदान करेंगे, जिससे विद्यार्थियों का समग्र विकास सुनिश्चित किया जा सकेगा।

सम्बन्धित शोध साहित्य का सर्वेक्षण

शर्मा, परवीन (2017) ने *ग्रामीण और शहरी विद्यालयों में संघटनात्मक वातावरण और विद्यार्थियों के प्रदर्शन का अध्ययन* किया। शिक्षा उस समय सुगम होती है जब विद्यालय का वातावरण ''सुरक्षित, सहायक और सीखने पर केंद्रित'' हो। यह सभी बच्चों पर लागू होता है, जिसमें विशेष शैक्षिक आवश्यकताओं वाले बच्चे यानी असाधारण बच्चे भी शामिल हैं। यह छोटे बच्चों पर भी लागू होता है। वास्तव में, जैसे–जैसे बच्चा विद्यालय में प्रवेश करता है, ''विद्यालय का सामाजिक वातावरण'' और भी अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है। वर्तमान अध्ययन इसी दिशा में एक कदम है, जहाँ विभिन्न शोधकर्ताओं ने अपने अनुसंधानों की नींव रखी है। इस अध्ययन में शोधकर्ता ने ''ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के माध्यमिक विद्यालय विद्यार्थियों की धारित संघटनात्मक वातावरण और उनके शैक्षणिक प्रदर्शन के बीच संबंध'' की तुलना करने का प्रयास किया है। यह अध्ययन ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में विद्यार्थियों के साथ काम करने वाले कर्मियों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण होगा।

मेहमत असलान, ओपन मोडल सुजाना कोसिर, मरीन लेविड्ज (2020) ने *टैगियुरी की श्रेणीकरण प्रणाली के माध्यम से किशोर विकास के सैद्धांतिक आधार : शैक्षिक वातावरण का संघटनात्मक जलवायु के रूप में विश्लेषण* किया। यह अध्ययन यह दर्शाता है कि शैक्षिक परिवेश में एक महत्वपूर्ण चुनौती यह है कि विद्यार्थियों की विकासात्मक और अकादमिक आवश्यकताओं को ऐसे तरीकों और रणनीतियों के माध्यम से पूरा किया जाए, जो उनके अपकारी व्यवहार को रोकने और अनुकूल व्यवहार को बढ़ावा देने में सहायक हों। अध्ययन के प्रमुख निष्कर्षों में से एक यह सुझाव देता है कि शैक्षिक प्रदर्शन और सुधार को तभी मापा जाना चाहिए जब उसे चार स्तरों वाली टैक्सोनॉमी के साथ जोड़ा जाए, ताकि शिक्षा में एक पूर्ण बंधन मॉडल का समग्र ढांचा प्राप्त किया जा सके।

जयलक्ष्मी कनियागुंडी पोडिया, जनार्दन नवनीतम, पूर्णिमा भोला (2025) ने *भारत में विद्यालयीय वातावरण का विद्यालय जाने वाले किशोरों की भावनात्मक स्वास्थ्य और शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव : एक प्रणालीगत समीक्षा पर अध्ययन* किया। इस समीक्षा के निष्कर्षों से यह स्पष्ट हुआ कि सकारात्मक विद्यालयीय वातावरण की विशेषताएँ जैसे छात्र–शिक्षक संबंध, सहपाठी समर्थन, जुड़ाव की भावना, विद्यालय में अपनापन महसूस करना, अध्ययन और शिक्षण के तरीके उच्च माध्यमिक छात्रों में अवसाद और तनाव के लक्षणों को कम करने, आत्म–सम्मान को बढ़ाने और शैक्षणिक प्रदर्शन में सुधार करने के साथ महत्वपूर्ण रूप से जुड़ी हुई हैं। ये परिणाम यह दर्शाते हैं कि एक सुरक्षा प्रदान करने वाला और सहायक विद्यालयीय वातावरण भारतीय किशोरों की समग्र भलाई और शैक्षणिक उपलब्धियों को बढ़ावा देने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

समस्या कथन

आवासीय विद्यालयों के संघटनात्मक वातावरण का विद्यार्थियों के व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।

©The Research Dialogue | Received: 01 April 2026 | Accepted: 05 April 2026 | Published: 15 April 2026

शोध के उद्देश्य

1. आवासीय विद्यालयों के संघटनात्मक वातावरण का विद्यार्थियों के व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।
2. आवासीय विद्यालयों के संघटनात्मक वातावरण का छात्रों के व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।
3. आवासीय विद्यालयों के संघटनात्मक वातावरण का छात्राओं के व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।

शोध की परिकल्पना

1. आवासीय विद्यालयों के संघटनात्मक वातावरण का विद्यार्थियों के व्यक्तित्व पर सार्थक प्रभाव नहीं है।
2. आवासीय विद्यालयों के संघटनात्मक वातावरण का छात्रों के व्यक्तित्व पर सार्थक प्रभाव नहीं है।
3. आवासीय विद्यालयों के संघटनात्मक वातावरण का छात्राओं के व्यक्तित्व पर सार्थक प्रभाव नहीं है।

शोध विधि

वर्तमान शोध हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

उपकरण

- संघटनात्मक वातावरण मापनी :— डॉ0 करुणा शंकर मिश्र द्वारा निर्मित प्रश्नावली।
- व्यक्तित्व मापनीः— डॉ0 गिरीधर प्रसाद ठाकुर द्वारा निर्मित प्रश्नावली।

न्यादर्श

वर्तमान शोध हेतु मुरादाबाद जनपद के अन्तर्गत आने वाले आवासीय विद्यालयों में अध्ययनरत 100 विद्यार्थियों का चयन स्तरीकृत यादृच्छिक विधि द्वारा किया जाएगा जिसमें प्रथम स्तर पर विद्यालयों का चयन एवं द्वितीय स्तर पर विद्यार्थियों का चयन किया जाएगा।

परिकल्पनाओं का विश्लेषण एवं व्याख्या

परिकल्पना क्रमांक 1 :— आवासीय विद्यालयों के संघटनात्मक वातावरण का विद्यार्थियों के व्यक्तित्व पर सार्थक प्रभाव नहीं है।

तालिका संख्या — 4.1

आवासीय विद्यालयों के संघटनात्मक वातावरण और विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के सहसम्बन्ध का विश्लेषण एवं व्याख्या

समूह	संख्या	सहसम्बन्ध	सार्थकता स्तर
विद्यार्थी	100	0ण213	धनात्मक

व्याख्या :— तालिका संख्या 4.1 में आवासीय विद्यालयों के संघटनात्मक वातावरण और विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के सहसम्बन्ध को दर्शाया गया है। आवासीय विद्यालयों के संघटनात्मक वातावरण और विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के मध्य सहसम्बन्ध का मान 0.213 प्राप्त हुआ है। प्राप्त सहसम्बन्ध का मान धनात्मक सहसम्बन्ध का प्रतीक है जो दर्शाता है कि आवासीय विद्यालयों के संघटनात्मक वातावरण और विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध पाया जाता है।

परिकल्पना क्रमांक 2 :— आवासीय विद्यालयों के संघटनात्मक वातावरण का छात्रों के व्यक्तित्व पर सार्थक प्रभाव नहीं है।

तालिका संख्या — 4.2

आवासीय विद्यालयों के संघटनात्मक वातावरण और छात्रों के व्यक्तित्व के सहसम्बन्ध का विश्लेषण एवं व्याख्या

समूह	संख्या	सहसम्बन्ध	सार्थकता स्तर
छात्र	50	0ण024	धनात्मक

व्याख्या :– तालिका संख्या 4.2 में आवासीय विद्यालयों के संघटनात्मक वातावरण और छात्रों के व्यक्तित्व के मध्य सहसम्बन्ध की स्थिति को दर्शाया गया है। आवासीय विद्यालयों के संघटनात्मक वातावरण और छात्रों के व्यक्तित्व के मध्य सहसम्बन्ध का मान 0.024 प्राप्त हुआ है। प्राप्त सहसम्बन्ध का मान धनात्मक सहसम्बन्ध का प्रतीक है जो दर्शाता है कि आवासीय विद्यालयों के संघटनात्मक वातावरण और छात्रों के व्यक्तित्व के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध है

परिकल्पना क्रमांक 3 :– आवासीय विद्यालयों के संघटनात्मक वातावरण का छात्राओं के व्यक्तित्व पर सार्थक प्रभाव नहीं है।

तालिका संख्या – 4.3

आवासीय विद्यालयों के संघटनात्मक वातावरण और छात्राओं के व्यक्तित्व के सहसम्बन्ध का विश्लेषण एवं व्याख्या

समूह	संख्या	सहसम्बन्ध	सार्थकता स्तर
छात्राऐं	50	0ण124	धनात्मक

व्याख्या :– तालिका संख्या 4.3 में आवासीय विद्यालयों के संघटनात्मक वातावरण और छात्राओं के व्यक्तित्व के मध्य सहसम्बन्ध की स्थिति को दर्शाया गया है। आवासीय विद्यालयों के संघटनात्मक वातावरण और छात्राओं के व्यक्तित्व के मध्य सहसम्बन्ध का मान 0.124 प्राप्त हुआ है। प्राप्त सहसम्बन्ध का मान धनात्मक सहसम्बन्ध का प्रतीक है जो दर्शाता है कि आवासीय विद्यालयों के संघटनात्मक वातावरण और छात्राओं के व्यक्तित्व के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध है।

शोध के निष्कर्ष

1. आवासीय विद्यालयों के संघटनात्मक वातावरण का विद्यार्थियों के व्यक्तित्व पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया।
2. आवासीय विद्यालयों के संघटनात्मक वातावरण का छात्रों के व्यक्तित्व पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया।
3. आवासीय विद्यालयों के संघटनात्मक वातावरण का छात्राओं के व्यक्तित्व पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- शर्मा, परवीन (2017). ग्रामीण और शहरी विद्यालयों में संघटनात्मक वातावरण और विद्यार्थियों के प्रदर्शन का अध्ययन, शोध पत्र, IJCRT, Volume 5, Issue 2, 150-158.
- सिंह, बलवान (2018). माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण का शैक्षिक निष्पति पर प्रभाव का अध्ययन, शोध पत्र, Echetana, VOLUME-3, 235-242.
- मेहमत असलान, ओपन मोडल सुजाना कोसिर, मरीन लेविड्ज (2020). टैगियुरी की श्रेणीकरण प्रणाली के माध्यम से किशोर विकास के सैद्धांतिक आधार : शैक्षिक वातावरण का संघटनात्मक जलवायु के रूप में विश्लेषण, शोध पत्र, DOI: 10.2174/1874350102013010160
- टी. मोहम्मद सलीम एवं मुनीर वजहयिल (2021). केरल के आदिवासी आवासीय विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों में करियर आकांक्षाएँ पर अध्ययन, शोध पत्र, https://www.researchgate.net/publication/352178826
- कुमार, ए. (2021). विद्यार्थियों के विकास में परिवार व आवासीय विद्यालयों की भूमिका का समीक्षात्मक अध्ययन, शोध पत्र, https://www.researchgate.net/publication/356428492

- भंडारी, सविता एवं मंजू (2023). आवासीय एवं गैर आवासीय माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के समय प्रबंधन का उनकी शैक्षिक उपलब्धि के संदर्भ में अध्ययन, शोध पत्र, IJCRT, Volume 11, Issue 2, 955-961.
- कुमार, अमित एवं सिंह महेन्द्र (2024). जनपद पीलीभीत के कस्तूरबा गांधी आवासीय विद्यालय व परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन, शोध पत्र, International Journal of Creative Research Thoughts, 908-915.
- जयलक्ष्मी कनियागुंडी पोडिया, जनार्दन नवनीतम, पूर्णिमा भोला (2025). भारत में विद्यालयीय वातावरण का विद्यालय जाने वाले किशोरों की भावनात्मक स्वास्थ्य और शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव : एक प्रणालीगत समीक्षा पर अध्ययन, शोध पत्र, https://bmcpublichealth.biomedcentral.com/
- कुमार, अरविन्द एवं कुमार, आनन्द (2025). माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि, मानसिक स्वास्थ्य और समायोजन समस्याओं का अध्ययन, शोध पत्र, The International Journal of Indian Psychology, Volume 13, Issue 3, 55-64.

Cite this Article

दिनेश कुमार, डा0 सुशील कुमार, "आवासीय विद्यालयों के संघटनात्मक वातावरण का विद्यार्थियों के व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन" The Research Dialogue, Open Access Peer-reviewed & Refereed Journal, Pp-497–504, Volume-05, Issue-01, April-2026, https://theresearchdialogue.com/

This is an Open cess Journal / article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License CC BY-NC-ND 3.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited. All rights reserved.

CERTIFICATE

of Publication

This Certificate is proudly presented to

दिनेश कुमार[1], डॉ0 सुशील कुमार[2]

For publication of Research Paper title

आवासीय विद्यालयों के संघटनात्मक वातावरण का विद्यार्थियों के व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

Published in 'The Research Dialogue' Peer-Reviewed / Refereed Research Journal and E-ISSN: 2583-438X, Volume-05, Issue-01, Month April, Year-2026, Impact Factor (RPRI-4.73)

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Editor- In-chief

Dr. Neeraj Yadav
Executive-In-Chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at: https://theresearchdialogue.com/